नसीहत लई जिन मोमिनों, ए तरफ जानें सोए।
अर्स हौज जोए, रूहें पेहेचान यासों होए।। ८६ ।।

जिन मोमिनों ने इस ज्ञान को ले लिया है, वही इसे जानते हैं। उन्हें ही रंग महल, हौज कौसर तालाब, जमुनाजी की पहचान है।

जो अरवाहें अर्स की, सो यामें खेलें रात दिन।
ऊपर तले मांहें बाहेर, ए जरे जरा जाने मोमिन।। ८७ ।।

जो परमधाम की रूहें हैं वह रात-दिन यहीं खेलती हैं। वह ऊपर-नीचे, अन्दर-बाहर की जर्रा-जर्रा की हकीकत जानती हैं।

महामत कहे ए मोमिनों, क्यों कहूं पहाड़ सिफत।
ए लज्जत तिनको आवसी, जाए हक बका निसबत।। ८८ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मोमिनो! पहाड़ की सिफत का बयान कैसे करूं? जो श्री राजजी महाराज तथा अखण्ड घर के निसबती हैं उनको ही इसकी लज्जत आएगी।

।। प्रकरण ।। १३ ।। चौपाई ।। ८३४ ।।

ताल बंगले जोए मोहोलात

मोहोल के तले ताल जो, तुम देखो अर्स अरवाए।
रहिए संग सुभान के, छोड़िए नहीं पल पाए।। १ ।।

आकाशी महल के नीचे पुखराजी ताल है। हे परमधाम की रूहो श्री राजजी महाराज के साथ रहकर इसकी शोभा को देखो और एक पल के लिए भी श्री राजजी महाराज के चरणों से अलग मत होना।

ऊपर पहाड़ के ताल जो, बोहोत बड़ो विस्तार।
तले बड़े मोहोलात के, सो नेक कहूं विचार।। २ ।।

पहाड़ के पुखराजी ताल का विस्तार बहुत बड़ा है। इसके नीचे बड़े-बड़े मोहोलात हैं। उसकी भी थोड़ी हकीकत बताती हूं।

बड़े देहेलान कचेहेरियां, बैठक बारे हजार।
हक हादी रूहन की, नाहीं सिफत सुमार।। ३ ।।

यहां बड़ी-बड़ी दहलानें है, पड़साल हैं। यहां बारह हजार रूहें बैठती हैं। श्री राजश्यामाजी और रूहें जब बैठते हैं तो वहां की शोभा बेशुमार हो जाती है।

थंभ बड़े जवेरन के, कहूं सो केते रंग।
बोहोत छज्जे कई रंगों के, करे जोत जोत सों जंग।। ४ ।।

यहां जवेरात के बड़े-बड़े थंभ हैं जिनमें कई तरह के रंग हैं। बहुत से कई रंगों के छज्जे हैं जिनकी किरणें आपस में टकराती हैं।

कई छज्जे ताल ऊपर, पड़त जल में झांईं।
मोहोल सबे माहें देखत, खूबी आवे न जुबां माहीं।। ५ ।।

कई छज्जे ताल के ऊपर हैं जिसकी झांईं जल में पड़ती है। मोहोल की परछाई भी जल में दिखाई देती है। यहां की जबान से इस हकीकत का बयान कैसे करूं?

Nijanand App

अंदर मोहोल नेहेरें चलें, चारों तरफों फिरत।
इन सबमें सोभा देय के, पुखराजें पोहोंचत।। ६ ।।

आकाशी महल की चांदनी में बीच के पानी वाले पेड़ से पानी सभी महलों में, बगीचों में से उतरता हुआ आता है और ऊपर पुखराज की चांदनी पर पहुंचता है। यहां से पानी पुखराजी ताले में पहुंचता है।

तीनों तरफों ताल के, जुदी जुदी मोहोलात।
बड़े छज्जे तरफ पहाड़ के, दोऊ बाजू दरखतों छात।। ७ ।।

पुखराज ताल के तीन तरफ अलग-अलग मोहलातें शोभा देती हैं। बड़े बंगलों से पुखराज पहाड़ तक बड़े-बड़े छज्जे जाते हैं तथा उनके दोनों तरफ वन आया है (पांच-पांच पेड़)। यह वन और जवेरों के महल बड़े ऊंचे हैं। उनका थोड़ा सा बयान करती हूं।

मोहोल दोऊ छातों पर, तिन परे भी बड़े वन।
ए बन मोहोल अति बिलन्द, पर नेक करूं रोसन।। ८ ।।

तालाब के दोनों तरफ बंगलों की छतों पर जवेरात के महल तथा महावन के वृक्ष आए हैं। यह वन तथा महल विशाल हैं। थोड़ी हकीकत इनकी भी बताती हूं।

दोऊ बाजू बन मोहोल दोऊ, परे दोऊ तरफों दरखत।
पीछे मोहोल पर बड़े मोहोल, तिनकी जुदी बड़ी सिफत।। ९ ।।

महल के दोनों तरफ महावन के पांच-पांच पेड़ों की शोभा है। महलों पर महल आए हैं। इनकी भी अलग सिफत है।

आगूं दोऊ सिरे गुरज दोए, माहें छज्जे कई किनार।
दोऊ बीच में पानी उतरत, गिरत चादरें चार।। १० ।।

पुखराज पहाड़ और बंगलों के बीच दो गुर्ज आए हैं। इनके किनारे पर छज्जे शोभायमान हैं। इन दोनों गुर्जों के बीच में जमुनाजी का पानी पुखराजी पहाड़ से चार चादरों में गिरता है।

सो चारों जुदी जुदी, उपरा ऊपर भी चार।
सोभा लेत और गरजत, सो सोले भई सुमार।। ११ ।।

पुखराज ताल से चारों चादरें (झरने) ऊपरा-ऊपर पूरब की तरफ अधबीच के कुण्ड में सोलह धाराओं में गिरता है जहां पर दो लाख कोस की ऊंचाई से पानी के गिरने का कारण बड़ी गर्जना होती है।

दोऊ गुरज बीच बड़े देहेलान, जित सोले जाली द्वार।
थंभ झरोखे दोऊ तरफों, ए सोभा अति अपार।। १२ ।।

पानी की धाराओं के दोनों तरफ दो गुर्ज आए हैं जहां सोलह जालीदार दरवाजे से पानी अधबीच के कुण्ड में गिरता है। इन चार नहरों पर दोनों तरफ थंभ और झरोखे आए हैं। इनकी शोभा अपार है।

तले बैठ जब देखिए, जानों गुरज लगे आसमान।
क्यों कहूं इन मोहोलात की, खेलें रूहें हादी सुभान।। १३ ।।

नीचे बैठकर जब देखते हैं तो ऐसा लगता है कि गुर्ज आसमान तक गए हैं। इन मोहोलातों की शोभा का बखान कैसे करूं, जहां श्री राजजी, श्री श्यामाजी और रूहें खेलती हैं।

Nijanand App

मोहोल बड़े बीच गुरजों के, खूबी लेत तरफ दोए।
एक खूबी तरफ ताल के, दूजी ऊपर चादरों सोए।। १४ ।।

दोनों गुर्जों के बीच में चार धाराओं के किनारे पर दोनों तरफ बड़े-बड़े महलों की शोभा है। ताल की तरफ भी ऐसी शोभा है और अधबीच के कुण्ड की तरफ जहां चादरें गिरती हैं, ऐसी ही शोभा है।

तले चारों सीढ़ी जुदी जुदी, पीछे करत पानी मार।
सो चारों उपरा ऊपर, इन विध पड़त धार।। १५ ।।

पहली भोम में चार, दूसरी में चार, तीसरी में चार और चौथी में चार इस तरह से सोलह धाराओं द्वारा पानी अधबीच के कुण्ड में गिरता है।

सो धारें पड़त बीच कुण्ड के, कुण्ड पर मोहोल गिरदवाए।
दोऊ बाजू छातें दरखत, पीछे मोहोल मिले आए।। १६ ।।

यह सोलह धाराएं अधबीच के कुण्ड में गिरती है जहां पर घेरकर खास महल आए हैं। उन महलों के दोनों तरफ मधुवन के पांच-पांच पेड़ आए हैं।

चारों तरफ झरोखे कुण्ड के, बीच चादरें खूबी देत।
बड़े देहेलान कचेहेरियां, हक रूहें खुसाली लेत।। १७ ।।

महलों के झरोखों से सोलह चादरों (झरनों) की खूबी अति सुन्दर दिखाई देती है। बड़ी देहलान और कचहरियों की शोभा का आनन्द श्री राजश्यामाजी और सखियां लेती हैं।

खास मोहोल कुण्ड ऊपर, जहां लेहेरी छलकत जल।
सो जल उतरत पहाड़ से, चढ़ गिरत ऊंचे नल।। १८ ।।

अधबीच के कुण्ड में जहां जल हिलोरें लेता है, उसके किनारे पर खास महल आए हैं। पुखराज पहाड़ से पानी उतरता-उतरता नलों की भांति सोलह चादरों से गिरता है।

बंगले

बिराजे बंगले, ए जो मोहोल तले ताल।
बारे हजार बड़ी रूह ले, हकसों खेलत माहें हाल।। १९ ।।

श्री राजश्यामाजी, सखियां पुखराजी ताल के नीचे कभी-कभी बंगलों में आकर बैठते हैं। यहां पर श्री श्यामाजी बारह हजार सखियों को साथ लेकर श्री राजजी के साथ मस्ती से खेलती हैं।

पहाड़ तले कई कुण्ड हैं, कई विध पानी फिरत।
कई जिनसें केती कहूं, नेहेरें साम सामी चलत।। २० ।।

इन बंगलों में पुखराजी ताल के नीचे कई कुण्ड बने हैं जहां पर पानी घूमता है और आमने-सामने नहरें चलती हैं।

कई नेहेरें फिरें माहें फिरतियां, कई आड़ियां आवत।
एक बड़ी नेहेर बाहेर निकसी, सो पानी पूर ज्यों चलत।। २१ ।।

कई नहरें अन्दर घूमती हैं, कई आड़ी आती हैं, कई बाहर जाती हैं और एक बड़ी नहर में पानी आकर तेज बहाव में आगे चलता है।

Nijanand App

खास बिरिख कई विध के, सो केते कहूं विवेक।
तले पहाड़ छाया मिने, जानों ए बिरिख अति विसेक।। २२ ।।

यहां कई तरह के वृक्ष हैं। उनका कहां तक बयान करूं? उन वृक्षों के नीचे पहाड़ की शोभा है।

बन सुन्दर अति उत्तम, सोभा लेत ए ठौर।
ए बन छाया का देखे पीछे, जानो ऐसा न कोई और।। २३ ।।

बंगलों में चबूतरे के ऊपर वन की बड़ी सुन्दर शोभा है जिसे देखकर लगता है कि इससे अच्छी और कोई जगह नहीं है।

थंभ बड़े बड़ी जाएगा, पहाड़ तले चहुंओर।
ए खूबी कही न जावहीं, बन सोभित नेहेरें जोर।। २४ ।।

बंगलों के पहाड़ के नीचे चारों तरफ चार थंभों की बड़ी शोभा है। इन वनों के बीच में चार नहरों की सुन्दर शोभा कहने में नहीं आती।

बीच बीच दोरी बंध, अड़तालीस बंगले।
हर हारें अड़तालीस, ए बैठक पहाड़ तले।। २५ ।।

बंगलों के चबूतरे के ऊपर अड़तालीस बंगलों तथा अड़तालीस चहबच्चों की अड़तालीस हारें एक सीध में हैं।

बराबर नेहेरें चेहेबच्चे, और बराबर दरखत।
झूठी जुबां इन देहकी, क्यों कर कहे ए जुगत।। २६ ।।

चहबच्चों में नहरें बराबर चलती हैं और वृक्षों की भी बड़ी सुन्दर शोभा है। यहां के झूठे तन की झूठी जबान से इसका वर्णन कैसे करूं?

चारों तरफों बराबर, ऊपर लगे पहाड़ सों आए।
जुदे जुदे जवेरन को, नूर पहाड़ तले न समाए।। २७ ।।

चारों तरफ ऊपर पहाड़ (बंगला) तक बराबर दोरीबन्ध यह शोभा आई है। यहां अलग-अलग जवेर के रंगों का तेज बंगला के पहाड़ के नीचे समाता नहीं है।

छात पांचमी पोहोंची पहाड़लों, बड़े बंगले बड़ी दिवाल।
बड़े छज्जे चारों तरफों, सुख पाइए जो आवे हाल।। २८ ।।

बंगलों की पांच भोम हैं। इन बंगलों की दीवार के ऊपर चारों तरफ से छज्जे निकलते हैं जिसको देखकर दिल बड़ा खुश होता है।

कई रंगों जरी पसमी, कई दुलीचे रंग केते।
सोभित हैं सबों बैठकें, कई नकस बेल फूल जेते।। २९ ।।

कई रंग के पश्म के दुलीचे शोभा देते हैं। हर जगह बैठकें बनी हुई हैं और उनमें बेल, फूल और पत्तों की नक्शकारी है।

Nijanand App

दो तीन चार पुड़े चौकियां, कई जवेरों झलकत।
सीसे प्याले डब्बे तबके, कई वस्तें धरियां इत।। ३० ।।

कई दो रास्ते (दोपुड़े) कई तीन रास्ते (त्रिपुड़े) कई चार रास्ते (चौपुड़े) आए हैं जहां जवेरों की झलकार होती है। इन बंगलों में दर्पण, प्याले, डिब्बे, सिनगार की सामग्री रखी है।

कई सादे सिंघासन, कैयों ऊपर छत्र।
कई ठौर कदेले कुरसियां, कई तखत खूबतर।। ३१ ।।

कई जगह सादे सिंहासन हैं। कईयों के ऊपर छत्र हैं। कई जगह पर गदेला (गद्दे) कुर्सियां हैं और कई जगह पर सुन्दर तख्त हैं।

कई एक ठौरों हिंडोले, कई सेज बिछोने पलंग।
कई जुदे जुदे जवेर, करत मिनो मिने जंग।। ३२ ।।

कई जगह पर हिंडोले चलते हैं और कई ठिकानों पर पलंग पर सेज्या के बिछौने लगे हैं। यहां जवेरात (जवाहरात) की किरणें आपस में टकराती हैं।

कई सोभित हैं सांकलें, माहें डब्बे पुतलियां तबक।
इत रूहें संग स्यामाजी, बीच बिराजत हक।। ३३ ।।

कई सांकलें (जंजीरें) शोभा देती हैं। उनके अन्दर डिब्बे, तश्तरियों और पुतलियों की चित्रकारी है। यहां श्री राजश्यामाजी रूहों के साथ बैठते हैं।

कई सीढ़ियां सोब्रन की, कई हीरा मानिक पुखराज।
उपली भोमे चौकी पर, कई धरे संदूकें साज।। ३४ ।।

कई सीढ़ियां सोने की हैं। कई हीरे, माणिक और पुखराज की हैं। बंगलों की ऊपर की भोम में चौकी पर कई सन्दूकें और सिनगार सामग्री रखी है।

कई सोभित साखें कमाड़ियां, जोर जवेर झलकार।
घोड़े कड़े बेनी जंजीरां, रोसन करत अपार।। ३५ ।।

चौखट और किवाड़ों में कई तरह के जवाहरात झलकार कर रहे हैं। इन किवाड़ों की बेनी और बेड़े (चौखट की लम्बी पट्टी) कड़े, जंजीर सुन्दर शोभा देते हैं।

हर बंगले विस्तार बड़ा, आगूं बड़े दरबार।
कई मोहोलों कई मंदिरों, कहों कहां लग कहूं न सुमार।। ३६ ।।

हर एक बंगले का विस्तार बहुत भारी है। उसके अन्दर कई महल हैं, कई मन्दिर हैं। उनकी गिनती कहां तक बताऊं?

ए बन जवेर अर्स के, खूबी कहा कहे जुबान।
बीच बैठक चबूतरे, सुख रूहें संग सुभान।। ३७ ।।

परमधाम के वन जवाहरातों के हैं। उनकी खूबी यहां की जबान से कैसे बताएं? बंगलों के बीच चबूतरों पर सुन्दर बैठक बनी है जहां श्री राजजी रूहों के साथ सुख लेते हैं।

Nijanand App

चारों तरफों नेहेरें चलें, बीच कठेड़े चबूतर।
चेहेबच्चे बीच बीच बन, ए सिफत कहूं क्यों कर।। ३८ ।।

बंगलों के चबूतरे के चारों तरफ नहरें चलती हैं और किनारे पर कठेड़ा लगा है। चहबच्चे, नहरें वन में शोभा देते हैं। इसकी सिफत कैसे कहूं?

कई मोहोल नेहेरें किनारें, कई बनमें बिराजत।
भांत भांत कई विध के, ए किन विध करूं सिफत।। ३९ ।।

कई महल नहरों के किनारे पर बने हैं। कई वनों के अन्दर यह तरह-तरह से शोभा युक्त हैं। इनकी महिमा कैसे गाऊं?

बन मोहोल नेहेरें कहीं, इन जिमी विध कही न जाए।
ए अर्स जवेर देख्या चाहे, सो ए बन देखो आए।। ४० ।।

इस जमीन की, वन की, महलों की, नहरों की हकीकत कहने में नहीं आती। जिन्हें परमधाम के जवाहरातों के नग देखने हों वह इस वन में आकर देख लो।

जैसा पहाड़ तैसी जिमी, और तैसेही दरखत।
ए मोहोल ऐसे जवेरनके, जुबां क्यों कर करे सिफत।। ४१ ।।

जैसे बंगलों का पहाड़ है वैसे ही यहां की जमीन है और वैसे ही वृक्ष हैं। वैसे ही नगों के महल हैं। इनकी शोभा का बयान यहां की जबान से कैसे हो?

ए नूर खूबी इतकी इतहीं, इनका निमूना सोए।
और सब्द तो निकसे, जो और ठौर कोई होए।। ४२ ।।

यह सब नूर तत्व का है और इसकी शोभा वहीं पर है। इसका कहीं और नमूना हो, तो शब्दों से उपमा देकर बयान करें।

ए दरखत नेहेरें चेहेबच्चे, बीच खेलन ठौर कमाल।
याही विध बड़े पहाड़ लग, सुख रूहें नूरजमाल।। ४३ ।।

यहां के वृक्ष, नहरें और चहबच्चा, खेलने के ठिकाने सभी कमाल के हैं। इस तरह से पुखराजी पहाड़ तक पूरी शोभा है। यहां पर श्री राजश्यामाजी, रूहें आनन्द लेती हैं।

पेहेली तरफ का जो बन, बड़े मेहेराव आगूं दरखत।
ए बन मेवे केते कहूं, अर्स अजीम की न्यामत।। ४४ ।।

बंगलाजी को घेरकर बीच में चार थंभों में मेहराबें तथा घेरकर पांच-पांच लम्बे पेड़ आए हैं। इन वनों में कई तरह के मेवे हैं। यही परमधाम की न्यामत है।

जहां लो नजरों देखिए, ए बड़े बिरिख अति विस्तार।
मेवे मोहोल छातें बनी, ना कछू पसु पंखी को पार।। ४५ ।।

जहां तक नजर दौड़ाते हैं, इन बड़े वृक्षों का बड़ा विस्तार है। इसमें मेवा, महल, छतें हैं और पशु-पक्षी बेशुमार हैं।

Nijanand App

सोई जिमी उज्जल अति सोभित, ए जो पहाड़ नजीक या दूर।
आकास भरयो रोसनी, कहां लग कहूं ए नूर।। ४६ ।।

पहाड़ के नजदीक की हो या दूर की हो, जमीन बड़ी उज्ज्वल शोभा देती है। इस उज्ज्वलता की तंरगें आकाश तक फैलती हैं। इनका कहां तक वर्णन करें?

आकास भरयो खुसबोय सों, वाए तेज खुसबोए।
जित तित सब खुसबोए, बोए चांद सूर दोए।। ४७ ।।

पूरा आकाश खुशबूदार तेज हवा से भर जाता है। जहां कहीं देखो, सब जगह खुशबू है। यहां तक कि चन्द्रमा और सूर्य से भी सुगन्धि आती है।

पेड़ बोए पात बोए, बोए फल फूल डार।
जल जिमी खुसबोए को, कछू आवे नहीं सुमार।। ४८ ।।

पेड़, पत्ता, फल, फूल, डालें, जल, जमीन सभी कुछ सुगन्धित हैं। इसका शुमार नहीं है।

जित देखूं तित खुसबोए, पहाड़ जवेर बोए नूर।
रस धात रेजा रेज जो, खुसबोए सबे जहूर।। ४९ ।।

जहां देखो वहीं सुगन्धि है। चाहे पहाड़ हों या जवाहरात हों, धातु हों, कण-कण सब खुशबूदार है।

कई रेहेत अंदर जानवर, कई विध बोलें बान।
ए खूबी खुसाली हक की, जुदी जुदी कई जुबान।। ५० ।।

अन्दर कई जानवर रहते हैं जो कई तरह से बोलते हैं। श्री राजजी महाराज की खूब खुशालियां कई तरह की अलग-अलग बोलियां बोलकर रिझाती हैं।

पसु सबे खुसबोए सों, खुसबोए सबे जानवर।
तन बंध बंध खुसबोए सों, बोए बाल पर पर।। ५१ ।।

पशु और जानवर सब सुगन्धियों से भरपूर हैं। उनके तन, अंग-अंग के जोड़, बाल तथा पर सब खुशबूदार हैं।

वस्तर भूखन रूहन के, ताकी क्यों कहूं खुसबोए।
इन खूबी खुसबोए को, सब्द न पोहोंचे कोए।। ५२ ।।

रूहों के वस्त्र, आभूषणों की खुशबू का कैसे बयान करूं? यहां का कोई शब्द नहीं मिलता।

हकीकत तले पहाड़ की, ए जो नेक कही जुगत।
ए विस्तार इत बोहोत है, जुबां कर न सके सिफत।। ५३ ।।

बंगले के पहाड़ के नीचे की यह छोटी सी युक्ति बताई है। यहां विस्तार बहुत ज्यादा है जो जबान से वर्णन करने में नहीं आता।

जिन जानों रूहन को, अर्स में सेवक नाहें।
हुकमें काम करावत, जो आवत दिल माहें।। ५४ ।।

ऐसा नहीं समझना कि परमधाम में रूहों के सेवक नहीं है। उनके दिल में जो बात होती है वह सब हुकम से पूरी हो जाती है।

Nijanand App

एक एक मोमिन के, अलेखे सेवक।
बड़ी साहेबी बका मिने, बंदे तिन माफक।।५५ ।।

एक-एक मोमिन के बेशुमार सेवक हैं। इनकी साहेबी परमधाम में बड़ी है और उनके सेवक भी उन्हीं के अनुसार महिमा वाले हैं।

पुतलियां जवेरन की, सोभा सुन्दरता अत।
कहूं केती सेवा बंदगी, सब अग्या सों करत।।५६ ।।

जवाहरात की पुतलियों की शोभा अति सुन्दर है। यह सब भी सेवा और बन्दगी में आगे रहती हैं और हुकम से सब काम करती हैं।

या बिध सब जानवर, और केते कहूं पसुअन।
सब विध करें बंदगी, जैसा सोभित जिन।।५७ ।।

इस तरह से सभी जानवर और पशु जिसको जैसा शोभा देता है, बन्दगी करता है।

हुकमें होवे सब बंदगी, आगूं इन रूहन।
हंसें खेलें नाचें गाएं, कई विध करें रोसन।।५८ ।।

रूहों के हुकम के आगे सब बन्दगी सेवा करते हैं। वह हंसते हैं, खेलते हैं, नाचते हैं, गाते हैं तथा कई तरह से रूहों को रिझाते हैं।

पसु पंखी जवेरन के, अति सोभा अर्स में लेत।
सब सेवा करें रूहन की, इत ए काम कर देत।।५९ ।।

ऐसे जवाहरात के पशु-पक्षी परमधाम की शोभा हैं। यह सभी रूहों की इच्छानुसार सेवा करते हैं।

कई पुतलियां जवेरन की, खड़ियां तले इजन।
हजार दौड़ें एक हुकमें, आगूं इन रूहन।।६० ।।

यहां जवाहरात की पुतलियां रूहों के हुकम पर खड़ी रहती हैं। एक हुकम करने में रूहों के सामने हजारों दौड़ती हैं।

हर रूहों आगूं दौड़ हीं, कई खूबी लेत खुसाल।
रात दिन कबूं न काहिली, रहें हमेसा बीच हाल।।६१ ।।

यह जवाहरातों की पुतलियां हर एक रूह के आगे दौड़कर खूब आनन्द करती हैं। रात-दिन कभी इनमें सुस्ती नहीं आती हमेशा सेवा में मग्न रहती हैं।

बंदियां खूब खुसालियां, जाए फिरें ज्यों मन।
काम कर दसों दिस, आए खड़ियां वाही खिन।।६२ ।।

यह जवाहरातों की पुतलियां खूब खुशालियों की सेवा में हाजिर रहती हैं और मन की चाल की तरह दौड़ती हैं। यह दसों दिशाओं में काम कर उसी क्षण में आकर खड़ी हो जाती हैं।

ए दौड़ें रूहों के मन ज्यों, खड़ियां हुकम बरदार।
एक रूह मनमें चितवे, वह जी जी करें हजार।।६३ ।।

यह खूब खुशालियां रूहों के मन के अनुसार हुकम में खड़ी रहती हैं। रूहें जैसा मन में सोचती हैं वह हजारों की संख्या में 'जी-जी' करके दौड़ती हैं।

Nijanand App

मुख केहेने की हाजत ना पड़े, जो उपजे रूहों के दिल।
सो काम कर ल्यावें खिन में, ऐसा इनों का बल।। ६४ ।।

मुख से कहने की आवश्यकता ही नहीं पड़ती। रूहों के दिल में जो इच्छा होती है, खूब खुशालियों में इतनी ताकत है कि एक क्षण में वह उसे पूरा करके आ जाती हैं।

सरूप रूहों के मनके, जो कछुए मन चाहें।
ऊपर तले माहें बाहेर, एक पल में काम कर आएं।। ६५ ।।

यह खूब खुशालियां रूहों के मन के स्वरूप हैं। रूहों के मन में जो चाहना पैदा होती है, ऊपर, नीचे, अन्दर, बाहर कहीं की भी इच्छा हो, एक पल में काम करके ले आती हैं।

कई ले खड़ियां रूमाल, कई ले खड़ियां पान डब्बे।
बंदियां बारे हजार की, आगूं अलेखे।। ६६ ।।

कई रूमाल लिए खड़ी हैं। कई पान के डिब्बे लिए खड़ी हैं। इस प्रकार बारह हजार रूहों के बेशुमार सेवक हैं।

कई वस्तां आगूं ले खड़ियां, वस्तर भूखन कई साज।
ए साहेबी अर्स अजीम की, ए नाहीं ख्वाब के राज।। ६७ ।।

यह खूब खुशालियां कई वस्तुएं जैसे वस्त्र, आभूषण और साज लेकर सेवा में खड़ी रहती हैं। परमधाम की रूहों की ऐसी साहेबी है जो स्वप्न के राज्य में भी नहीं है।

ए खूबी इन अर्सकी, क्यों कहूं इन जुबान।
कायम सुख साहेबी, ए होए रूहों बीच बयान।। ६८ ।।

परमधाम की खूबी का यहां की जबान से कैसे वर्णन करूं? यह साहेबी अखण्ड सुख देने वाली है। इसे रूहें ही जानती हैं।

ए बातें केती कहूं, अर्स के जो सुख।
साहेबी इन रूहन की, इत बरनन याही मुख।। ६९ ।।

परमधाम के सुखों का कहां तक बयान करूं? रूहों की साहेबी यहां के मुख से बयान नहीं की जाती।

जो जवेर बंदे रूहन के, देखो तिन को बल।
जानत हो इन विध को, देखियो अपनी अकल।। ७० ।।

यह जवाहरात की पुतलियां, जो रूहों की सेवक हैं, इनकी ताकत को देखो। इनकी हकीकत को जानना हो तो अपनी जागृत बुद्धि से देखो।

मैं तुमें पूछों मोमिनो, जो तुम हो अर्स के।
तुम अपनी रूहसों विचार के, जबाव दयो मुझे ए।। ७१ ।।

श्री महामतिजी मोमिनों से पूछते हैं कि यदि तुम अर्श के हो तो अपनी आत्मा से विचार कर मुझे यह उत्तर दो।

Nijanand App

उड़त पर के वाउसे, कोट ब्रह्मांड देवे उड़ाए।
एक छोटी चिड़िया अर्स की, ताकी लड़ाई क्यों कही जाए।।७२ ।।

परमधाम की एक छोटी चिड़िया के पर उड़ाने की हवा से करोड़ों ब्रह्माण्ड उड़ जाते हैं, तो उन चिड़ियों की लड़ाई का वर्णन कैसे करूं?

कोट ब्रह्मांड पर के वाउ से, अर्स चिड़िया देवे उड़ाए।
तो इन अर्स के फील को, बल देखो चित्त ल्याए।।७३ ।।

परमधाम की चिड़िया के पर की हवा से करोड़ों ब्रह्माण्ड उड़ जाते हैं, तो परमधाम के हाथी की ताकत को जरा चित्त में लेकर देखो।

खरगोस एक जवेर का, चले रूह के मन सों।
बड़ा फील लड़े अर्स का, कहो कौन जीते इनमों।।७४ ।।

जवाहरात का खरगोश (ससला) रूह के मन की इच्छा पर चलता है। परमधाम के हाथियों से खरगोश लड़ता है। बताओ दोनों में कौन जीतता है?

रूहों दिल चाहे बोलत, दिल चाही सोभा सुन्दर।
दिल चाहे पेहेरे भूखन, दिल चाहे वस्तर।।७५ ।।

यह जानवर रूह की इच्छा के अनुसार बोलते हैं और रूहों की दिल चाही सुन्दर शोभा, वस्त्र, आभूषण पहनकर, बताते हैं।

करें दिल चाही सब बंदगी, चित चाह्या चलत।
दिल चाहे बल तेज जोत, सब दिल चाही सिफत।।७६ ।।

सब रूहों के मन के अनुसार ही सेवा करते हैं। इनके चित्त के अनुसार ही चलते हैं और अपना बल, शक्ति और तेज दिखाते हैं। रूहों के दिल के अनुसार ही गुणगान करते हैं।

सब वस्तां आगे ले खड़ियां, ज्यों पातसाही लवाजम।
आगूं चेतन दिल से, खड़ियां सनमुख एक कदम।।७७ ।।

सभी वस्तुएं लेकर खूब खुशालियां आगे वैसे ही खड़ी रहती हैं जैसे बादशाह के सामने हजूरी लोग खड़े होते हैं। यह सभी पहले से ही जानते हैं, इसलिए वह एक पांव पर सदा हुकम के इन्तजार में खड़ी हैं।

रूप रंग रस दिल चाहे, दिल चाही चित चितवन।
दिल चाही अकल इन्द्रियां, करें दिल चाही रोसन।।७८ ।।

वह अपने रूप, रंग रूहों के दिल के अनुसार बनाते हैं और उनके दिल के अनुसार उनकी विचारधारा, बुद्धि व इन्द्रियां काम करती हैं।

ए जो खूब खुसाली सूरतें, सो सब रूहों के दिल।
ए जो हर रूहों के आगे खड़ी, बांध अपनी मिसल।।७९ ।।

यह सभी खूब खुशालियों के स्वरूप रूहों के दिल हैं जो अपनी-अपनी जमात में हर रूह के सामने खड़ी होती हैं।

Nijanand App

क्यों कर कहूं ए साहेबी, ए जो रूहें करत अर्स माहें।
हकें कई देखाए ब्रह्मांड, पर कोई पाइए न निमूना क्यांहें।। ८० ।।

परमधाम के बीच इनकी साहेबी का कैसे वर्णन करूं? श्री राजजी महाराज ने कई ब्रह्माण्ड दिखाए (बृज, रास और जागनी) पर कहीं ऐसा नमूना नहीं मिला।

झूठ आगे सांच के, क्यों आवे सरभर।
नाहीं क्यों कहे आगूं है के, लगे ना पटंतर।। ८१ ।।

सत्य परमधाम की शोभा के आगे यह झूठे संसार की झूठी उपमा कैसे लगे? संसार मिट जाने वाला है, परमधाम अखण्ड है, इसलिए झूठ की उपमा अखण्ड को नहीं लगती।

ए जो दुनियां खेल कबूतर, साहेबी आगूं रूहन।
ए खरगोस रूहों के दिल का, लड़े साथ अर्स फीलन।। ८२ ।।

रूह की साहेबी के सामने दुनियां खेल के कबूतर के समान है। परमधाम में रूहों के मन का स्वरूप खरगोश अर्श के हाथियों के साथ लड़ता है।

ए जो फौज रूहों के दिलकी, सो आवत सांच समान।
तिन आगे त्रैगुन यों कर, ज्यों चली जात खेल की जहान।। ८३ ।।

यहां रूहों के दिल की सेना सदा अखण्ड है। उनके आगे यहां के ब्रह्मा, विष्णु, महेश मरने-मिटने वाले जीवों के समान हैं।

उपजत रूहों के दिल से, राखत ऐसा बल।
कई कोट ब्रह्मांड के खावंद, चले जात माहें एक पल।। ८४ ।।

यह खरगोश रूहों के दिल की शक्ति से इतने ताकतवर होते हैं कि करोड़ों ब्रह्माण्ड के खाविंद, आदि नारायण (महाविष्णु) तो एक पल में ही उड़ जाते हैं।

ए सुध अर्स में रूहों को नहीं, देखी खेल में बड़ाई रूहन।
तो खेल हकें देखाइया, ऊपर मेहेर करी मोमिन।। ८५ ।।

इस साहेबी और अपने इस मरातबे की खबर रूहों को परमधाम में नहीं थी, इसलिए श्री राजजी महाराज ने रूहों को मेहर का खेल दिखाया। इतनी बड़ी रूहों की साहेबी है।

नजरों होत अछर के, कोट चले जात माहें खिन।
मैं सुन्या मुख धनी के, खेल पैदा फना रात दिन।। ८६ ।।

अक्षर ब्रह्म की नजर में करोड़ों ब्रह्माण्ड एक क्षण में पैदा होकर मिट जाते हैं। यह बात मैंने अपने धनी के मुखारबिन्द से सुनी है।

एक इन वचन का बसबसा, तबका रेहेता था मेरे मन।
लखमीजी का गुजरान, होत है विध किन।। ८७ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि इस बात का संशय मेरे मन में लगा हुआ था कि महालक्ष्मीजी का गुजरान कैसे होता है?

Nijanand App

खेल दुनियां अर्स खेलौने, करें बाल चरित्र भगवान।
या खेल या बिन साहेबी, होए लखमीजी क्यों गुजरान।। ८८ ।।

परमधाम के सामने यह दुनियां खिलौने के समान है जो अक्षर ब्रह्म की बाल लीला है। जब अक्षर भगवान के खेल बनाने की लीला में लक्ष्मीजी वह साथ नहीं देतीं और न ही रूहों जैसी साहेबी है, तो वैसे कैसे रहती होगी?

सो संसे मेरा मिट गया, हक इलमें किए बेसक।
दिलमें संसे क्यों रहे, जित हकें अपनी करी बैठक।। ८९ ।।

जागृत बुद्धि की तारतम वाणी से यह मेरा संशय मिट गया। जिस दिल में श्री राजजी महाराज बैठे हों उसमें संशय कैसे रह सकता है?

अर्स कह्या दिल मोमिन, दिया अपना इलम सहूर।
सक ना खिलवत निसबत, ताए काहे न होवे जहूर।। ९० ।।

मोमिनों के दिल को श्री राजजी महाराज ने अर्श कहा है और अपनी जागृत बुद्धि की तारतम वाणी भी इन्हीं को दी है। इससे मूल-मिलावे के, खिलवतखाने और सम्बन्ध में कोई संशय नहीं रह गए तो फिर इस बात की जानकारी क्यों न हो जाए?

जैसी साहेबी रूहन की, विध लखमीजी भी इन।
वाहेदत में ना तफावत, पर ए जानें रूहें अर्स तन।। ९१ ।।

रूहों की जैसी साहेबी परमधाम में है, लक्ष्मीजी को भी इसी तरह समझें। इनकी एकदिली में कोई फर्क नहीं है, इसकी जानकारी रूहों को ही है जिनका तन परमधाम में है।

ए बातें बका अर्स की, बिना रूहें न जाने कोए।
ए बातें खुदाए की, और तो जाने जो दूसरा होए।। ९२ ।।

यह बातें अखण्ड परमधाम की हैं। रूहों के बिना इसे और कोई नहीं जानता। यह बातें श्री राजजी महाराज की हैं रूहों के बिना कोई हो तो समझे।

निपट बड़े सुख अर्स के, इत आवत नहीं जुबांए।
देख माया निमूना झूठ का, याकी बातें करसी अर्स माहें।। ९३ ।।

परमधाम के सुख अखण्ड हैं जिनका बयान इस जबान से नहीं हो सकता। माया में झूठा नमूना देखकर जब घर जाएंगे, तब यहां की बातें परमधाम में करेंगे।

महामत कहे हुकमें इलम, जो हक सिखावें कर हेत।
सो केहेवे आगूं अर्स तन के, अपने दिल अर्स में लेत।। ९४ ।।

श्री महामतिजी श्री राजजी के हुकम से कहते हैं कि जिनको श्री राजजी महाराज प्यार करके अपने इलम से जगा देते हैं, वही मोमिन दूसरे मोमिनों को जागृत बुद्धि के तारतम ज्ञान से जगावे। जो मोमिन इस हकीकत को अपने अर्श-दिल में ले लेते हैं, उन्हीं मोमिनों की जमात श्री निजानन्द सम्प्रदाय कहलाती है।

॥ प्रकरण ॥ १४ ॥ चौपाई ॥ ९२८ ॥

Nijanand App